ये अव्यक्त इशारे

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

8-08-2026

कोई भी विकर्म वा व्यर्थ कर्म अगर बार-बार हो जाते हैं तो इसका कारण है कि सदा साथी को साथ में नहीं रखते हो अथवा साथ का अनुभव नहीं करते हो। जैसे शक्तियां एक सेकण्ड की दृष्टि से असुर संघार करती हैं, ऐसे कम्बाइन्ड रूप की स्मृति से अपने आसुरी संस्कार वा अपवित्रता के संकल्पों को सेकण्ड में संघार करो।

Finish the seed of impurity and become completely clean (pure).

If you are repeatedly performing some sinful or wasteful action, it means that you are not keeping your Companion with you constantly or that you are not experiencing His company. Just as the Shaktis are able to destroy evil with one second's drishti, in the same way, by remaining aware of your combined form, you can destroy your devilish sanskars or thoughts of impurity in a second.